सोरोकिनः एक क्रान्तिकारी चितंक

अनु रानी
असिस्टेंट प्रोफेसर
समाजशास्त्र विभाग
रानी भाग्यवती देवी महिला महाविद्यालय
बिजनौर

सारांशः

20वीं शताब्दी में समाजशास्त्र को नवीन दिशा देने वाले रूसी–अमेरिकन समाजशास्त्री पितिरिम सोरोकिन अपने युग के सभी समाजशास्त्रियों एवं अन्य समाज वैज्ञानिकों का पथ प्रदर्शन करते रहें उनकी प्रसिद्ध कृतियाँ समकालीन समाजशास्त्रियों जैसे टॉलकट पारसन्स राबर्ट के. मर्टन, जॉन एच. बाल्डीरेक, जॉन डेवी विलबर्ट मूर जैसे विद्वानों का पथ प्रदर्शन करती रही।

समाजशास्त्र के प्रति उनका अनूठा प्रेम देखकर जिम्मरमैन में उन्हें 'विश्व का महानतम समाजशास्त्री' कहा है। अपनी अद्वितीय शिक्षण कला के कारण वे अपने विद्यार्थियों के मन को झकझोर कर उन्हें नवीन दिशा में सोचने के लिए प्रेरित कर देते थे। सोरोकिन एक रुढ़िमुक्त एवं आदर्श शिक्षक थे। अतः उनके विभाग से अनेक विद्यार्थी तेजस्वी होकर निकले। प्रस्तुत शोध पत्र इस महान समाजशास्त्री सोरोकिन की संघर्षपूर्ण यात्रा को एक सार रूप में प्रस्तुत करने का प्रयास मात्र है।

मुख्य शब्दः

वोल्शेविक, जनवादी सरकार, साम्यवाद साख्यिकीय अन्वेषण

Reference to this paper should be made as follows:

अनु रानी

सोरोकिनः एक क्रान्तिकारी चितंक

Vol. XV, Sp. Issue
Article No. 10,
pp. 072-77

Online available at
https://anubooks.com/journal/journal-globalvalues

DOI: https://doi.org/10.31995/jgv.2024.v15iS1.010

पितिरिम एलेक्जेंड्रोविक सोरोकिन:

अमेरिकी एवं रूसी क्रांति को बेहद करीब से देखने वाले बहुमुखी, प्रतिभाशाली विद्वान पितिरीम एलेगजेंड्रोविक सोरोकिन का जन्म 21 जनवरी सन 1889 में रूस में स्थित वोल्गा प्रांत के टोरिया नामक गांव में हुआ था बालपन में ही माता का देहांत हो गया था। इनके पिता शिल्पकार थे अपने व्यवसाय के संदर्भ में उनके पिता को एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाना पड़ता था इनका आरंभिक जीवन भी पिता के साथ घूमने फिरने में ही बीता इस कारण उनकी प्रारम्भिक शिक्षा शुरू न हो सकी सकी, उनकी प्रारंभिक शिक्षा स्वशिक्षा ही रही क्योंकि औपचारिक रूप से इन्हें किसी प्राथमिक स्कूल में जाने का अवसर नहीं मिला। 14 वर्ष की आयु में रूस के ऑर्थोडॉक्स चर्च में एक मिशनरी स्कूल में उनकी शिक्षा आरंभ हुई, यहीं से इन्होंने अपनी प्रतिभा का परिचय देना शुरू किया। सोरोकिन के दो भाई थें जिनके नाम थे वैसिली एवं प्रोकोपिय इन दोनों भाइयों की मृत्यु साम्यवादी क्रांति में ही हुई थी। एक को साम्यवादी द्वारा मार दिया गया, जबकि दूसरे की मृत्यु कारागार में ही हुई थी। विद्रोही स्वभाव के कारण सोरोकिन ने भी जारवादी सरकार का विरोध किया। सन् 1906 में इन्हें कारागार में डाल दिया गया, यही उनकी पहली जेल यात्रा थी। उन्हें कॉलेज से निष्कासित भी कर दिया गया। वे सेन्ट पीटर्स पर चले गये जहाँ उन्होंने ट्वीटर के रूप में दो वर्षो तक कार्य किया। इस दौरान विश्वविद्यालय में प्रवेश पाने के लिए वे यहाँ तैयारी भी करने लगे। सेंट पीटर्स बर्ग में एक प्राइवेट युनिवर्सिटी के साइकोन्यूरोलॉजिकल इन्स्ट्टीयूट में उन्होंने मैट्रिक की परिक्षा पास की।

सन् 1910 के अंत में सोरोकिन ग्रेजुएट करने के लिए सेंटपीटर्स युनिवर्सिटी चले गये, यहाँ उन्होंने लिवोन पेट्राजिटजकी के निर्देशन में विधि समाजशास्त्र की शिक्षा ग्रहण की। सन् 1914 में इन्होंने अपनी स्नातक डिग्री प्राप्त की, तथा प्रोफेसरशिप की तैयारी के लिए एवं मास्टर डिग्री व लेक्चरशिप प्रदान करने के संदर्भ में विश्वविद्यालय द्वारा चार वर्ष के लिए अच्छी छात्रवृत्ति स्वीकृत की गई। जहाँ अन्य छात्रों को मास्टर डिग्री एवं पीएच.डी. करने में चार वर्ष का समय लगता था सोरोकिन ने दो वर्ष की अवधि में ही सन् 1916 के अन्त में इस परीक्षा को पास कर लिया। अब वे युनिवर्सिटी में लेक्चरर पद के काबिल हो गये। इस दौरान सोरोकिन ने अपने शोध प्रबंध के रूप में क्राइम एन्ड पनिशमेन्ट, सर्विस एवं रिवार्ड जैसे विषयो ंका चयन किया और उनके प्राफेसरों ने इन दोनों विषयों को अपनी स्वीकृति भी प्रदान कर दी। किंतु 1917 में रूसी क्रांति के कारण उनका रिसर्च का कार्य रुक गया। मार्च 1917 के बाद कई वर्षों तक विश्वविद्यालय के सारे कार्य बंद हो गये और सोरोकिन को 1922 तक इसके लिए लम्बी प्रतिक्षा करनी पड़ी तथा उन्होंने समाजशास्त्र में डॉक्टरेट की उपाधि से अलंकृत होने के लिए शोध–प्रबंध के रूप में उन्हें 'सिस्टम ऑफ सोशियोलॉजी' 2 वाल्यूम को प्रस्तुत करना पड़ा। और इसी पर उन्हें पीएच.डी. की डिग्री 23 अप्रैल 1922 ई॰ में 23 वर्ष की आयु में प्रदान की गई। सोरोकिन की पत्नी का नाम एलेना सोरोकिन था, जो हैमलिन विश्वविद्यालय में वनस्पति शास्त्र विषय पढ़ाती थी।

सोरोकिन के क्रांतिकारी कार्यों के कारण उन्हें जारशाही के समय छः बार गिरफ्तार होना पड़ा जीन बार जार द्वारा तथा तीन बार बोलशेविकों द्वारा इसके बाद जब रूसी क्रांति का विस्फोट हुआ तब भी इन्हें गिरफ्तार किया गया। उन्होंने लेनिन तथा ट्राटस्की का भी घोर विरोध किया। जब 1917 में एलैक्जैण्डर केरेन्स्की रूस के प्रधानमंत्री बने तब उन्होंने सोरोकिन को अपने निजी सचिव और सरकारी पत्रिका 'विल ऑफ द पीपुल्स' का मुख्य संपादक नियुक्त किया। जब बोलशेविकों ने केरेन्स्की को उसके पद से हटाया तब सोरोकिन ने उनका प्रबल विरोध किया। उस समय वे बोलशेविकों से अपनी जान बचाने के लिए जंगले में भागते–फिरते रहे किंतु अंत भी पकड़ लिये गये, और उन्हें सन् 1922 में फांसी की सजा सुनाई गई। उस समय उनके मित्रों तथा पहले के शिष्यों ने बीच में पड़कर उन्हें फाँसी चढ़ने से बचा लिया लेनिन ने उन्हें इस शर्त पर कि साम्यवादियों का समर्थन करें तो उन्हें उच्च पद दिया जाएगा, किंतु सोरोकिन ने इस शर्त को मानने से इन्कार कर दिया। परिणाम स्वरूप उन्हें देश से निष्कासित कर दिया गया चेकोस्लोवाकिया के राष्ट्रपति माशार्क ने जो कि सोरोकिंन के मित्र थे उन्हें अपने पास ठहरने के लिए आमंत्रित किया यहाँ पर सोरोकिन 9 माह तक रहे। सन् 1923 में अमेरिका चले गये और वहीं के नागरिक बन गये। सन् 1924 से 1930 तक वे मिनीसोटा विश्वविद्यालय में समाजशास्त्र के प्रोफेसर रहे। सन् 1930 में उन्हें हार्वर्ड विश्वविद्यालय में प्रोफेसर पद के लिए आमंत्रित किया गया। उनके यहाँ आने से पहले हार्वर्ड विश्वविद्यालय में समाजशास्त्र का कोई पृथक विभाग नहीं था, वे इस विभाग के प्रथम अध्यक्ष तथा प्रोफेसर नियुक्त किये गए। इस विभाग का आविर्भाव का काल अमेरिका के समाजशास्त्र के आरम्भिक ताप का काल था। भले ही समाजशास्त्र की शुरुआत फ्रांस से हुई लेकिन अमेरिका में समाजशास्त्र का विकास सर्वाधिक हुआ इसका श्रेय सोरोकीन को जाता है। इसी विश्वविद्यालय को अपनी सेवाओं से समृद्ध करते–करते अमेरिका में समाजशास्त्र का बौद्धिक प्रभाव इतना बढ़ा कि उनकी छत्र छाया में पूरा हार्वर्ड विश्वविद्यालय समाजशास्त्रीय विचार–समुद्र की ओर तेजी से खिंचता जा रहा था। यही कारण है कि सोरोकिन के नेतृत्व में एक विशाल समूह की सृष्ठि हुई जिसमें से कुछ एक ने बाद में समाजशास्त्रीय जगत में विशिष्ठ ख्याति अर्जित की और जिसके कार्य से समाजशास्त्र की और प्रगति हुई जैसे टालकट पारसंस, कार्ल जिम्म्मरमैन, रॉबर्ट बियरस्टीड, रॉबर्ट के मर्टन, विल्मर्ट मूर, किंग्सले डेविस रोबिन विलियम्स आदि। सन् 1967 (अपनी मृत्यु समय) तक सोरोकिन हार्वर्ड विश्वविद्यालय में सेवाएँ देते रहें।

सोरोकिन बहमुखी प्रतिभा के धनी, क्रांतिकारी समाजशास्त्रीय जिन्होंने अपनी लेखनी को कभी विराम नहीं दिया, व्यक्तिगत जीवन हो या सामाजिक जीवन में आई हुई अड़चनों को उन्होंने कभी अपनी लेखनी पर हावी नहीं होने दिया। समाज एवं संस्कृति का गहन अध्ययन और समाजशास्त्र के प्रति उनका परम अनुराग उनके समाजशास्त्र साहित्य के प्रत्येक पृष्ठ पर अंकित है उन्होंने सामाजिक परिवर्तन का सिद्धांत, सामाजिक गतिशीलता, सामाजिक स्तरीकरण के सिद्धांत, सीमाओं का सिद्धांत, क्रांति का समाजशास्त्र आदि सिद्धान्त दिए। सोरोकिन स्वरूपात्मक संप्रदाय से सहमत नहीं थे वे समाजशास्त्र को स्वतंत्र एवं विशिष्ट विज्ञान नहीं

मानते थे। उन्होंने इस विचार की आलोचना की उन्होंने समाजशास्त्र को 'सामाजिक सांस्कृतिक घटनाओं का सामान्य विज्ञान' माना। सोरोकिन का कथन है कि'' वास्तव में कोई भी ऐसा विज्ञान (शायद गणित शास्त्र तथा औपचारिक तर्कशास्त्र को छोड़कर) नहीं है, जो की पूर्णतः स्वतंत्र हो और जिसे किसी दूसरे विज्ञान से सामग्री लेने की आवश्यकता ना हो।

एक रूसी–अमेरिकी समाजशास्त्री और राजनीतिक कार्यकर्ता होने के नाते इन्होंने सामाजिक व सांस्कृतिक गतिशीलता का सिद्धान्त दिया। इनके इस सिद्धान्त का विश्लेषण आसान नहीं है, क्योंकि उनका यह वृहत् ग्रन्थ 'सोंशल एन्ड कल्चरल डायनेमिक्स' की रचना की जो चार खण्डों में सन् 1937 से 1947 के बीच प्रकाशित हुआ था। इस पुस्तक के प्रकाशन में राबर्ट के. मर्टन, जॉन एच. बाल्डीरेफ आदि उनके विद्यार्थीयों ने बहुत सहयोग किया था। इन विद्यार्थियों ने दत्त–सामग्री के संकलन, सांख्यकीय परिकलन एवं परामर्शी सन्दर्भ कार्यों में उनकी बहुत मदद की थी। हार्वर्ड विश्वविद्यालय ने इस कार्य हेतु उन्हें चार वर्षो तक 10,000 धनराशि प्रदान की थी। इस पुस्तक में सोरोकिन ने पिछले पच्चीस हजार वर्षों की सभ्यता एवं 3000 संस्कृतियों का अध्ययन करने के बाद यह निष्कर्ष दिया कि 'सामाजिक परिवर्तन स्वाभाविक प्रक्रिया है, जो आन्तरिक शक्तियों द्वारा गतिशील है, भावनात्मक सम्पूर्ण सांस्कृतिक व्यवस्था उतार–चढ़ाव के झूले में झूलती रहती है। चेतनात्मक से भावनात्मक, भवनात्मक से चेतनात्मक इन दोनों के बीच की अवस्था जो संक्रमण काल होता है, संक्रमणकाल को ही आदर्शात्मक संस्कृति कहते हैं।

सोरोकिन कम्युनिस्ट विरोधी थे, वह समाजवाद को 'मनुष्य का कीट' मानते थे। सोरोकिन रूसी लेखक लियो टालस्टॉय से बेहद प्रभावित था, इन्होंने पूरे जीवन टालस्टॉय के सिद्धान्तों का पालन किया। रूसी क्रांति के दौरान वह 'सोशलिस्ट रिवोल्यूशनरी पार्टी के सदस्य, रूसी संविधान सभा के उपाध्यक्ष, श्वेत आन्दोलन के समर्थक और प्रधानमंत्री अलेक्जेडर केरेन्स्की के निजी सचिव थे।

सोरोकिन ने अपनी पुस्तक 'सोशियोलॉजी ऑफ रिवोलयूशन' में छः प्रकार की क्रान्तियों की चर्चा की है।

1. राजनीतिक क्रांति 2. आर्थिक क्रांति 3. धार्मिक क्रांति 4. पारिवारिक क्रांति 5. राष्ट्रवादी क्रांति 6. सम्पूर्ण क्रांति

जिसमें इन्होंने बताया कि क्रान्ति सामाजिक ढाँचे को ध्वस्त कर देती है। 'सामाजिक क्रान्ति वह व्याधिकीय व्यवस्था है, जिसमें एक ओर लोगों के व्यवहार में और दूसरी ओर उनके मस्तिष्क, विचारधारा, विश्वासों और मूल्यांकन में परिवर्तन हो जाता है।

क्रान्ति से जन्म दर और मृत्युदर में अमूलभूत परिवर्तन होते है। क्रान्ति एक दुखद, व्याधिकीय एवं अहितकर होती है। समाजशास्त्र विषय फ्रांसीसी क्रान्ति की देन है। सामाजिक क्रान्ति से जो नवीन परिस्थितियाँ जन्म लेती, उनका सीधा प्रभाव व्यक्ति पर पड़ता है।

आर्थिक तथा कानूनी दृष्टि से क्रान्ति के समय दो प्रमुख वर्ग सामने आते हैं।

1. प्रथम वर्गः वे क्रांतिकारी जो पकड़े जाते है, जेल भेजे जाते है। अदालत के सामने उन पर मुकदमा चलाया जाता है।

2. दूसरा वर्ग वे हैं जो विपत्ति में फँसे लोगों का फायदा उठाना जानते है ये धन लूटकर अपना साम्राज्य स्थापित करते है, इन्हें दूसरों के कष्ट की कोई परवाह नहीं।

सोरोकिन की अन्य कृतियाँ हैं

P.A. Sorokin, Social Mobility, Haper, New York, 1927.

P.A. Sorokin, 'Contemporary Socioloical Theories', Harper, New York, 1928

P.A. Sorokin, with C.C. Zimmeman, 'Principles of Rural Urban Sociology,', Holt, New York, 1929.

P..A. Sorokin, "Sociocultural Causality, Space, Time', Duke University Press, Durhan, 1943.

P.A. Sorokin, 'The Social Philosophy of an Age of Crisis, Republished as Modem Historical and Social Philosophies', Dover New York, 1950.

P.A. Sorokin, 'Fads and Foibles in Modern Sociology', Regnery, Chicago, 1956.

P.A. Sorokin, 'Sociological Theories of Today, Harper, New York, 1966

सोरोकिन ने अपनी प्रतिभा का स्वयं आकलन किया था, समाजशास्त्रीय यथार्थ के प्रति भी अत्यन्त सजग थे उन्होंने अपने समाजशास्त्रीय योगदानों को अरस्तु के योगदानों से कम महत्व नहीं दिया है बल्कि जीवन की सांध्य बेला में उनके समकालीन समाजशास्त्रियों ने कम महत्व दिया। इसमें दो राय नहीं कि पारसन्स को प्रदीत्त करने में सोरोकिन की महत्त्वपूर्ण भूमिका रही है। पारसन्स के बारे में कहा जा सकता है कि पारसन्स की विचारधारा को आगे बढ़ाने में सोरोकिन का बहुत बड़ा हाथ रहा है। समाजशास्त्र के इन दो महारथियों के मिलन से हार्वर्ड विश्वविद्यालय का समाजषास्त्र विभाग अजर–अमर हो गया। किंतु इस मिलन की अभिव्यक्ति कुछ दिनों तक ही स्थिर रही। पारसन्स के दि सोशल सिस्टम पुस्तक के प्रकाशन के साथ ही सोरोकिन और पारसन्स के बीच मतभेद हो गये। यह बात अलग है कि उनके जीवन की सांध्य बेला में उनके समकालीन समाजशास्त्रियों ने उनके योगदानों को कम महत्त्व दिया।

सोरोकिन द्वारा रचित 'कान्टेम्परी सोशियोलॉजिक्ल थीयरिज ने उनके द्वारा प्रस्तुत की गई समाजशास्त्र की परिभाषा आज के समाजशास्त्रियों के लिए अनुकरणीय है। यही नहीं बल्कि समाजशास्त्रीय विषय–वस्तु को लेकर जिन प्रश्नों को उन्होंने इस पुस्तक के अंतिम पृष्ठों में उठाया है वे आज समाजशास्त्रियों के लिए चुनौतिपूर्ण स्वर है।

संदर्भः

1. Sorokin P.A., 'Social and Cultural Dynamics', Four Volumes, American Book Company, New York 1937 P. 41.
2. Sorokin P.A., 'A Long Journey', College and University Press, New Haven, Conn, 1963, Ch. 1.
3. Znaniecki, Florian Quoted by Carie C. Zimmeman in 'Sociological Theroires of Pitirim A. Sorokin, (Ed.) K.N. Unnithan, Thacker and Co. Ltd. Bombay, 1973 P. iv.
4. Ravindra Nath Mukherjee, Social Thought, Vivek Prakash Jawahar Nagar, Delhi , 2020, P. 319.
5. अपराधशास्त्र एवं दंडशास्त्र तथा सामाजिक विघटन एटलांटिक पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूट्र्स, डॉ॰ रामनाथ शर्मा, डॉ0 राजेन्द्र कुमार शर्मा, 1996, पे0 137
5. Bierstedt Robert, Power and Progress, Mc Graw Hll, New York, 1974, P. 2